

जीन-बैप्टिस्ट-के मली कोरो (Jean-Baptiste-Camille Corot)

जीन-बैप्टिस्ट-के मली कोरो (Jean-Baptiste-Camille Corot) (1796–1875) फ्रांसीसी चित्रकला में एक सेतु के रूप में जाने जाते हैं, जिन्होंने शास्त्रीय परि श्य परंपरा और आधुनिक प्रभाववादी (Impressionist) शैली के बीच एक मधुर संतुलन स्थापित किया। उनकी कला में एक गहन शांति, सौम्यता और आत्मीयता दिखाई देती है, जिससे वे केवल एक परि श्य चित्रकार नहीं, बल्कि एक भावुक चित्रकार और संवेदनशील रचनाकार बन जाते हैं। Corot की रचनाएँ प्राकृतिक सौंदर्य का वह चित्रण हैं जो यथार्थ और स्मृति, रूप और भावना के मध्य स्थित हैं।

उन्होंने अपने जीवनकाल में चित्रकला के दो प्रमुख क्षेत्रों — परि श्य (landscape) और आकृति चित्रण (figure painting) — में उल्लेखनीय कार्य किया। उनके चित्रों की एक अलग विशेषता है — वे अपने भीतर एक अंतर्मुखी संगीत, एक कोमल आलोक और एक सूक्ष्म भावात्मकता को संजोए रहते हैं।

कोरो का जन्म पेरिस में एक संपन्न परिवार में हुआ था। उनके पिता ने उन्हें व्यावसायिक जीवन के लिए तैयार किया, परंतु उन्होंने युवावस्था में ही स्पष्ट कर दिया कि उनकी रुचि केवल चित्रकला में है। उन्होंने पहले Achille-Etna Michallon और फर Jean-Victor Bertin से परि श्य चित्रण का प्रशिक्षण लिया। उनके शिक्षकों ने उन्हें शास्त्रीय परि श्य की परंपरा से जोड़ा, जो Nicolas Poussin और Claude Lorrain जैसे कलाकारों के आदर्शों पर आधारित थी। 1825 में उन्होंने इटली की यात्रा की, जहाँ उन्होंने रोम और उसके आसपास के प्राकृतिक श्यों का अध्ययन किया। इस यात्रा ने उनके कलात्मक दृष्टिकोण को अत्यंत प्रभावित किया।

कलागत विशेषताएँ

कोरो की कला की प्रमुख विशेषता उनकी प्रकाश और वायुमंडलीय प्रभावों के प्रति संवेदनशीलता है। वे श्य के केवल श्यात्मक गुणों तक सीमित नहीं रहते, बल्कि उसकी अनुभूति, उसकी स्मृति और उसमें समाहित भावना को भी चित्रित करते हैं। उनके चित्रों में कोमल धुंध, सुबह की धूप, सरकती छाया, और हिलते पत्तों की मौन गूंज होती है।

उनकी ब्रशवर्क शैली तरल, लयात्मक और अत्यंत सूक्ष्म होती थी। कोरो कभी रंगों की तीव्रता के पीछे नहीं भागे; उन्होंने सादे, मृदुल और शांत रंगों के माध्यम से परि श्य में एक 'मूड' या भावनात्मक अनुभूति रची। उनकी रचनाएँ अक्सर एक ऐसे स्थान की अनुभूति देती हैं जो स्वप्न और यथार्थ के बीच स्थित हो — एक ऐसा श्य जो देखा भी गया है, और याद भी किया गया है।

प्रमुख कृतियाँ

View of the Roman Campagna (1826–1828)

Corot की प्रारंभिक रचना *View of the Roman Campagna* इटली में उनके प्रवास के समय की है। इसमें उन्होंने प्राचीन रोमन क्षेत्र के वस्तुतः शय को अत्यंत संतुलन और सौंदर्य के साथ चित्रित किया है। चित्र में न तो अत्यधिक ववरण है, और न ही अलंकरण — केवल भूमि, आकाश और प्रकाश का एक शांत संवाद है। यह कृति उनके शास्त्रीय प्रशिक्षण और प्राकृतिक अवलोकन के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है।

Morning: Dance of the Nymphs (1850)

यह एक स्वप्नवत कृति है जिसमें Corot ने पेड़ों के मध्य कुछ अप्सराओं को नृत्य करते हुए दिखाया है। यह चित्र न तो पूर्णतः यथार्थ है और न ही पूरी तरह कल्पना। इसमें पेड़, धुंध और नृत्य करती आकृतियाँ एक रहस्यात्मक सौंदर्य रचती हैं। यह कृति Corot की प्रतीकात्मक शैली और प्रकृति में छिपी आध्यात्मिकता का सूचक है।

Ville d'Avray Series

Corot ने अपने जीवनकाल में फ्रांस के Ville-d'Avray नामक गाँव में कई चित्र बनाए, जो उनके माता-पिता की संपत्ति के पास स्थित था। इस स्थान से उन्हें गहरा लगाव था। इस श्रृंखला में झील, पेड़, ग्रामीण मार्ग, और एकांत शय उनके व्यक्तिगत अनुभव और भावना से भरे हुए हैं। इनमें से कई चित्रों में वही पेड़ और वही जलाशय बार-बार आते हैं, पर हर बार एक नए आलोक, एक नए भाव और एक नए मौन के साथ।

Souvenir de Mortefontaine (1864)

यह उनकी सबसे प्रसिद्ध कृतियों में गनी जाती है। इस चित्र में एक झील के किनारे वृक्षों के नीचे बैठी दो स्त्रियाँ और एक बच्चा हैं। जल में वृक्षों की छाया, हवा की ध्वनि, और पूरी रचना में एक दिव्यता का भाव है। यह चित्र 'याद' और 'भावना' के योग का उदाहरण है — जैसे Corot ने शय को अपनी स्मृति और संवेदना से संजोकर चित्रित किया हो।

आकृति चित्रण और स्त्री आकृतियाँ

कोरो चित्रण में केवल परिशय तक सीमित नहीं थे। उन्होंने आकृति चित्रण में भी अद्भुत कार्य किया, विशेषकर स्त्री आकृतियों में। उनके द्वारा चित्रित स्त्रियाँ एक शांत सौंदर्य, गरिमा और आत्म-चेतना से भरी होती हैं। उनके चेहरे पर न कोई अतिनाटकीयता होती है, न ही बनावटीपन। *Woman with a Pearl* और *Lady in Blue* जैसी कृतियाँ उनकी इस शैली को दर्शाती हैं।

यद्यपि वे स्वयं प्रभाववादी (Impressionist) आंदोलन में सक्रिय नहीं थे, परंतु उनकी शैली और दृष्टिकोण ने Monet, Pissarro और Sisley जैसे प्रभाववादी चित्रकारों को अत्यंत प्रभावित

कया। Monet ने एक बार कहा था, “There is only one master here – Corot.” उनकी ब्रशवर्क की स्वतंत्रता, वायुमंडलीय प्रभावों पर ध्यान, और क्षण की अनुभूति — ये सब प्रभाववाद की नींव बने।

कोरो का जीवन अत्यंत शांत, वनम और रचनात्मकता से परिपूर्ण रहा। वे कलाकारों के मत्र, सहायक और मार्गदर्शक थे। उन्होंने जरूरतमंद कलाकारों की सहायता की, विशेषकर प्रभाववादी चित्रकारों को।

उनकी मृत्यु 1875 में हुई, परंतु उनकी कला और श्रुति आज भी जीवंत है। Musée du Louvre, Musée d’Orsay, और न्यू यॉर्क के मेट्रोपोलिटन म्यूजियम जैसे संस्थानों में उनकी कृतियाँ संरक्षित हैं और देखने वालों को एक असीम शांति और अंतर्मुखी आनंद का अनुभव कराती हैं।

उन्होंने प्रकृति को केवल चित्रित ही नहीं किया, बल्कि उसे आत्मसात किया। उनके चित्र मौन की भाषा बोलते हैं — वह मौन जो केवल गहराई से देखने वाले को सुनाई देता है। उन्होंने कला को चल्लाने से रोका और उसे एक धीमी, मधुर सरिता में बहाया। वे एक कव के समान शांत बिंबों का सृजन करते थे।